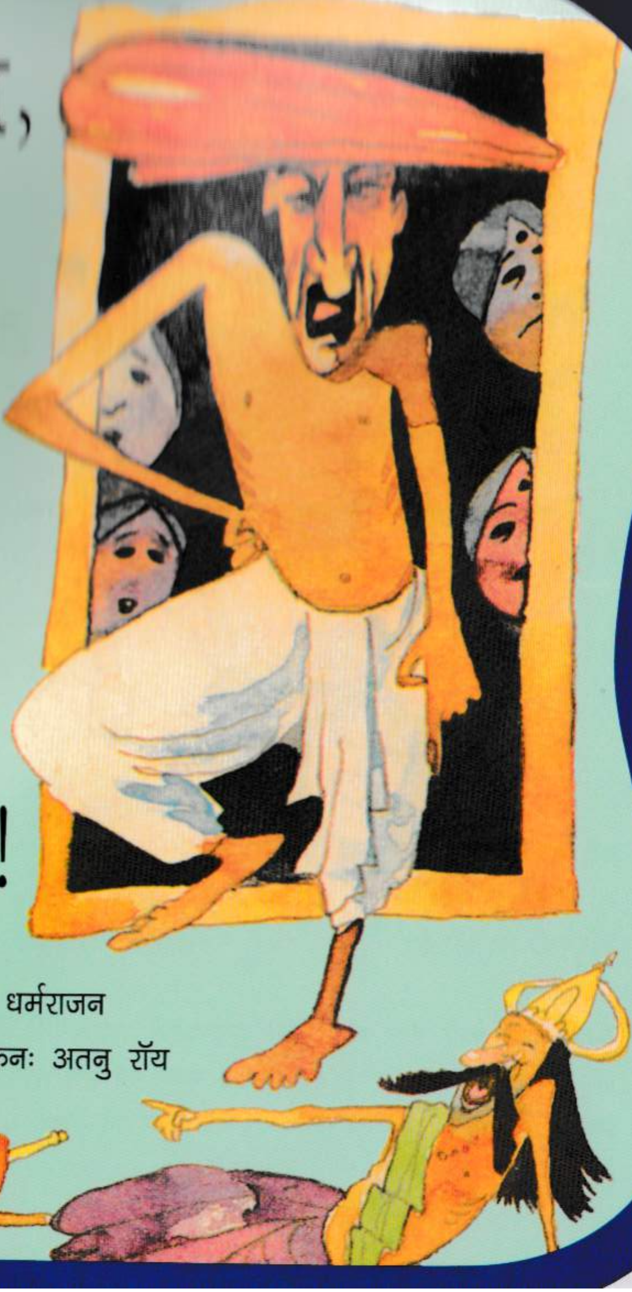
तमाशा बुक्स 8

यह आदमी कब
समझेगा कि लड़कियाँ
लड़कों से कम नहीं!

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

क बच्चों के लिए
कथा की किताब
ISBN 978-81-89020-91-0
www.katha.org
रु. 75/-

काश, एक बेटा मेरा भी होता!



गीता धर्मराजन
चित्राँकनः अतनु रॉय

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ैंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

अध्यापक / अध्यापिकाओं के लिए

बड़े उद्देश्य शृंखला – इस शृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

काश, एक बेटा मेरा भी होता! दुर्भाग्यवश, यह हमारे आज के भारत की सच्चाई है – लड़कियों की उपेक्षा। बच्चों को इस धारणा के विपरीत मिलजुलकर काम करने की शिक्षा दें। नए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करना सिखाएँ।

काश, एक बेटा मेरा भी होता!



गीता धर्मराजन
चित्राँकनः अतनु रॉय

बहुत दिन पहले झिलमिल नदी के किनारे मंदिर के पास, एक आदमी रहता था। उसका कोई बेटा नहीं था, केवल एक बेटी ही थी।



"शिव! शिव!" एक दिन वह आदमी बोला, "अगर कहीं मैं बिना बेटों के मर गया तो फिर स्वर्गलोक कैसे जाऊँगा?"

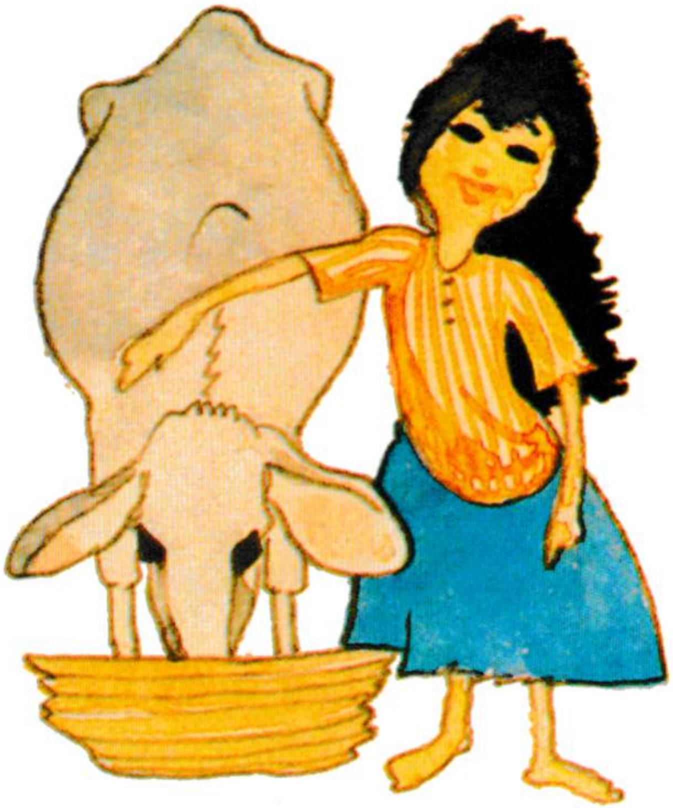
यह सोचकर, उसने दूसरी शादी कर ली।

फिर, तीसरी।

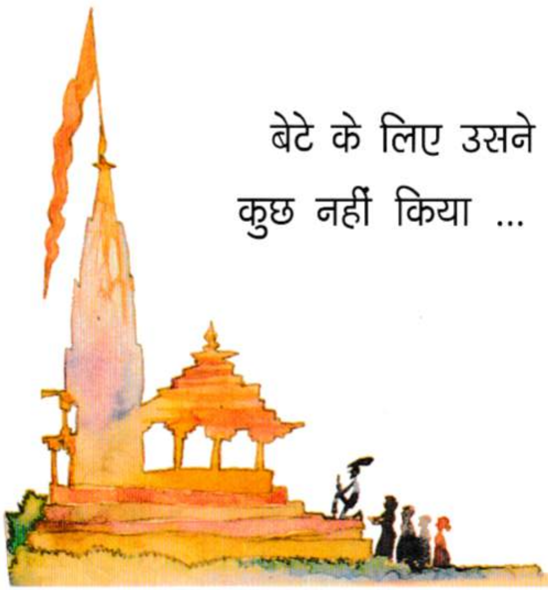
फिर, चौथी।



पर, उस बेटी के अलावा उसका
कोई और बच्चा न हुआ।



वह मंदिरों में गया, और
ख़ूब पूजा भी की।



बेटे के लिए उसने क्या
कुछ नहीं किया ...

फिर भी, उसका दूसरा
बच्चा नहीं हुआ।



धीरे–धीरे वह आदमी बूढ़ा हो गया।

एक दिन यमराज आए और बोले, "धरती पर तुम्हारे दिन पूरे हो गए हैं। अब तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।"

"नहीं! नहीं!" वह आदमी बोला, "मुझे मत ले जाओ। अभी मुझे एक बेटे की ज़रूरत है। आप अगले साल आना।"



अगले साल यमराज फिर आए।

"अभी नहीं!" वह आदमी गिड़गिड़ाया, "बस, एक बेटा हो जाए, फिर जब चाहे तब मुझे ले जाना।"

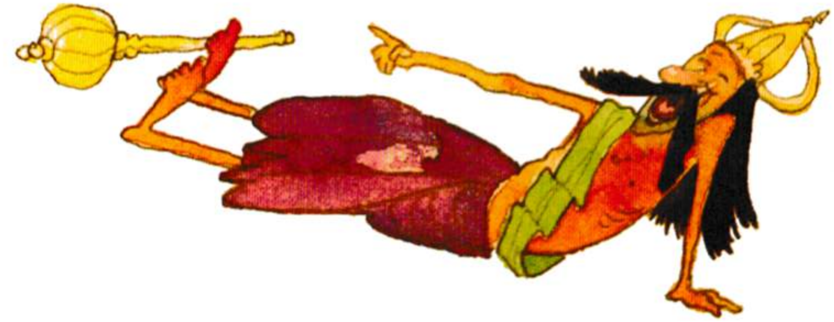
यमराज कुछ समझ नहीं पाए। "तुमने हमेशा अच्छे कर्म किए हैं। अगर तुम्हारे कोई बेटा नहीं है तो उस से क्या फ़र्क पड़ता है?" उन्होंने पूछा।



इस बार, उस आदमी के हैरान होने की बारी थी।

वह बोला, "क्या आप यह नहीं जानते कि केवल बेटे ही माँ-बाप की देखभाल करते हैं?

और जब मैं मरूँगा, तब बेटा ही तो मेरी चिता को आग देगा! तभी मैं स्वर्गलोक जा सकूँगा। मैं स्वर्ग जाना चाहता हूँ।"



यमराज हँस पड़े। ज़ोर से हँसे, खूब ज़ोर-ज़ोर से हँसे ...

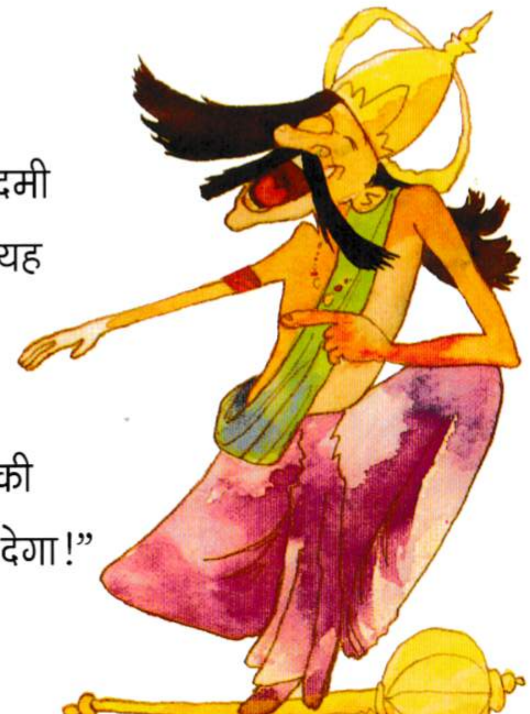
और इतनी ज़ोर से हँसे कि, देवलोक के सभी देवता – मोटे देवता, पतले देवता, लंबे देवता, छोटे देवता, हरे, नीले और गुलाबी देवता –



यह जानने के लिए, कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है, अचरज से नीचे देखने लगे।

हँसते हुए यमराज ने उन्हें बताया, “यह आदमी जिसकी बेटी दिन-रात उसकी सेवा करती है, सोचता है कि केवल बेटे ही माँ-बाप की देखभाल करते हैं!

और, यह आदमी सोचता है कि, यह स्वर्ग तभी पहुँचेगा, जब उसका बेटा उसकी चिता को आग देगा!”



यह सुनकर, देवता भी हँस पड़े। सब के सब! और तब उनकी हँसी वर्षा की बूँदें बनकर पृथ्वी पर गिरीं।





ज्योंहि एक बूँद, यमराज को मना करनेवाले उस आदमी पर गिरी, उसे स्वर्गलोक दिखने लगा।



वहाँ तरह-तरह के लोग थे। उसका दोस्त अप्पुनी भी वहीं था। अप्पुनी की तो केवल बेटियाँ ही थीं।

"हमारे बेटों ने तो हमारी चिता को आग नहीं दी," सबने उस आदमी से कहा।

"क्या तुम नहीं जानते कि लड़कियाँ, लड़कों से कम नहीं होतीं?"





देवताओं ने भी कहा “लड़कियाँ वह सब कुछ कर सकती हैं जो लड़के कर सकते हैं।

तुम्हारी बिटिया ने ही तुम्हें खिलाया-पिलाया और तुम्हारी देखभाल भी की।

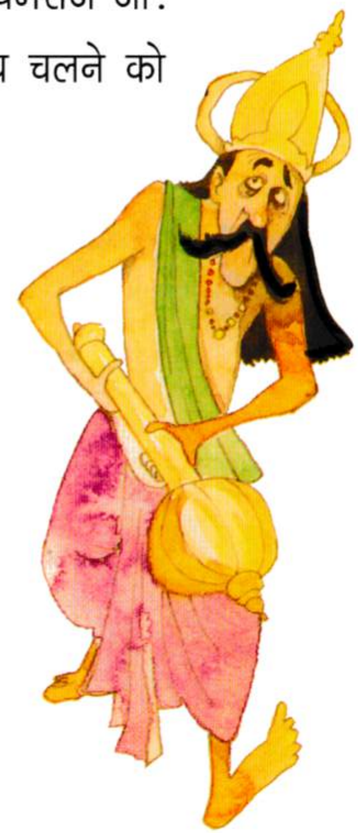


उसे ही सब कुछ करने दो, तुम स्वर्गलोक अवश्य आओगे!”

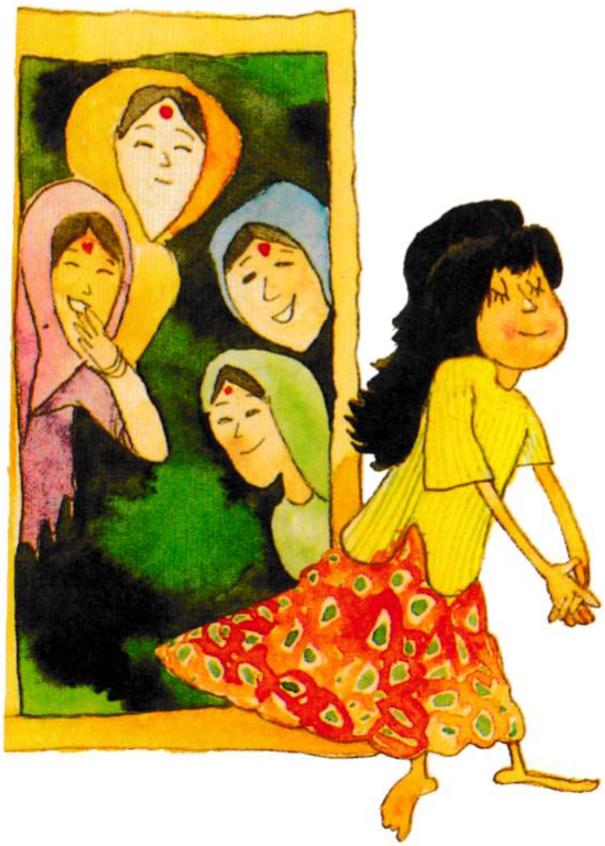


और वह आदमी जो यमराज को "अभी नहीं" कहता था, उसने अपनी बेटी को आश्चर्य से देखा।

"वाह!" मुस्काते हुए उसने अपनी बेटी का हाथ पकड़ा और यमराज से कहा, "यमराज जी! अब मैं आपके साथ चलने को तैयार हूँ।



पर कितना अच्छा होता, यदि आपने पहले ही मुझे यह बात बता दी होती। मैंने बेटी के साथ अपने दिन ख़ुशी-ख़ुशी बिताए होते।"





"कोई बात नहीं!" यमराज बोले, "अब मैं दस साल बाद ही आऊँगा।"







और इस तरह यमराज को
मना करनेवाला वह आदमी,
मौत को ही टाल गया –
अगले दस सालों तक!

अब सोचो तो ज़रा, दस साल के
बाद वह कहाँ गया होगा ?

सही समय की सही बात

तुम्हीं बताओ, लड़कियाँ चाहें तो क्या नहीं कर सकतीं! कमला भी चाहती है बहुत कुछ करना। पर उसके शैतान भाई मोहन ने कुछ अक्षर और मात्राएँ मिटा दी हैं। क्या तुम कमला की मदद करना चाहोगे?



समय पर पढ़न –



समय पर खे – ना ...

समय पर – ना ...





परिवार के सा¯ समय बिताना



हर क¯म का हो सही समय,

कमल¯ ने किया यह निश्चय!

चित्रांकनः सुजाता सिंह

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

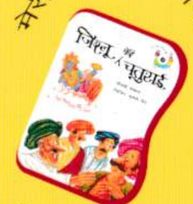


सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है। इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम
झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

मेरी अगली कहानी





KATHA

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
द्वितीय संस्करण, 2007, तृतीय संस्करण, 2009, चतुर्थ संस्करण, 2010

रेव इंडिया प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-91-0
संपादकीय टीम:
वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 26524350, 26524511, फैक्स: 26514373
ई मेल: ilr@katha.org, इंटरनेट: http://www.katha.org

प्रोडक्शन टीम:
प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार